

سُورَةُ الْجِنِّ

Surah 72 — Al-Jinn (The Jinn) · Meccan · 28 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا ۗ إِنَّا سَمِعْنَا قُرْءَانًا عَجَبًا ۝۱

(ऐ रसूल लोगों से) कह दो कि मेरे पास 'वही' आयी है कि जिनों की एक जमाअत ने (कुरान को) जी लगाकर सुना तो कहने लगे कि हमने एक अजीब कुरान सुना है

2

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۝۲ وَلَنُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝۱

जो भलाई की राह दिखाता है तो हम उस पर ईमान ले आए और अब तो हम किसी को अपने परवरदिगार का शरीक न बनाएँगे

3

وَأَنَّهُ ۝۳ تَعْلَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً ۝۴ وَلَا وَلَدًا ۝۱

और ये कि हमारे परवरदिगार की शान बहुत बड़ी है उसने न (किसी को) बीवी बनाया और न बेटा बेटी

4

وَأَنَّهُ ۝५ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝۱

और ये कि हममें से बाज़ बेवकूफ खुदा के बारे में हद से ज्यादा लगे बातें निकाला करते थे

5

وَأَنَا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝۱

और ये कि हमारा तो ख्याल था कि आदमी और जिन खुदा की निस्वत झूठी बात नहीं बोल सकते

6

وَأَنَّهُ ۝६ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝۱

और ये कि आदमियों में से कुछ लोग जिन्नात में से बाज़ लोगों की पनाह पकड़ा करते थे तो (इससे) उनकी सरकशी और बढ़ गयी

7

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا ۚ كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۚ

और ये कि जैसा तुम्हारा ख्याल है वैसा उनका भी एतकाद था कि खुदा हरगिज़ किसी को दोबारा नहीं ज़िन्दा करेगा

8

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَهَا مِلْئًا حَرَسًا ۚ أَشَدِّدًا ۚ وَشُهُبًا ۚ

और ये कि हमने आसमान को टटोला तो उसको भी बहुत क़वी निगेहबानों और शोलो से भरा हुआ पाया

9

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقْعِدَ لِلسَّمْعِ ۚ فَمَنْ يَسْتَمِعِ أَلْءَانَ يَجِدْ لَهُ ۚ شِهَابًا ۚ رَّصَدًا ۚ

और ये कि पहले हम वहाँ बहुत से मक़ामात में (बातें) सुनने के लिए बैठा करते थे मगर अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिए शोले तैयार पाएगा

10

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۚ

और ये कि हम नहीं समझते कि उससे अहले ज़मीन के हक़ में बुराई मक़सूद है या उनके परवरदिगार ने उनकी भलाई का इरादा किया है

11

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَلِكَ ۚ كُنَّا طَرَائِقَ قَدَدًا ۚ

और ये कि हममें से कुछ लोग तो नेकोकार हैं और कुछ लोग और तरह के हम लोगों के भी तो कई तरह के फिरकें हैं

12

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ نُعْجِزُهُ ۚ هَرَبًا ۚ

और ये कि हम समझते थे कि हम ज़मीन में (रह कर) खुदा को हरगिज़ हरा नहीं सकते हैं और न भाग कर उसको आजिज़ कर सकते हैं

13

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ ءَامَنَّا بِهِ ۚ ۚ فَمَنْ يُؤْمِنِ ۚ بِرَبِّهِ ۚ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا ۚ وَلَا رَهَقًا ۚ

और ये कि जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी तो उन पर ईमान लाए तो जो शरूख़ अपने परवरदिगार पर ईमान लाएगा तो उसको न नुक़सान का ख़ौफ़ है और न ज़ुल्म का

14

وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۚ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُوۓلَٰئِكَ تَحَرَّوۥا ۚ رَشَدًا ۚ

और ये कि हम में से कुछ लोग तो फ़रमाबरदार हैं और कुछ लोग नाफ़रमान तो जो लोग फ़रमाबरदार हैं तो वह सीधे रास्ते पर चलें और रहें

15

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۚ

नाफरमान तो वह जहन्नुम के कुन्दे बने

16

وَالَّذِينَ اسْتَقَمُوا ۚ عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً غَدَقًا ۚ

और (ऐ रसूल तुम कह दो) कि अगर ये लोग सीधी राह पर कायम रहते तो हम ज़रूर उनको अलगाय पानी से सेराब करते

17

لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ ۚ يَسْلُكُهُ عَذَابًا ۚ صَعَدًا ۚ

ताकि उससे उनकी आजमाईश करें और जो शरूअ अपने परवरदिगार की याद से मुँह मोड़ेगा तो वह उसको सख्त अज़ाब में झोंक देगा

18

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا ۚ مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۚ

और ये कि मस्जिदें खास खुदा की हैं तो लोगों खुदा के साथ किसी की इबादन न करना

19

وَأَنَّهُ ۚ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا ۚ يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۚ

और ये कि जब उसका बन्दा (मोहम्मद) उसकी इबादत को खड़ा होता है तो लोग उसके गिर्द हुजूम करके गिर पड़ते हैं

20

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا ۚ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ ۚ أَحَدًا ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की इबादत करता हूँ और उसका किसी को शरीक नहीं बनाता

21

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا ۚ وَلَا رَشَدًا ۚ

(ये भी) कह दो कि मैं तुम्हारे हक़ में न बुराई ही का एख्तेयार रखता हूँ और न भलाई का

22

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا

(ये भी) कह दो कि मुझे खुदा (के अज़ाब) से कोई भी पनाह नहीं दे सकता और न मैं उसके सिवा कहीं पनाह की जगह देखता हूँ

23

إِلَّا بَلَّغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَةً ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ فَإِنَّ لَهُ ۚ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا

खुदा की तरफ से (एहकाम के) पहुँचा देने और उसके पैग़ामों के सिवा (कुछ नहीं कर सकता) और जिसने खुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की तो उसके लिए यक़ीनन जहन्नुम की आग है जिसमें वह हमेशा और अबादुल आबाद तक रहेगा

24

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا ۚ مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضَعُفٌ نَّاصِرٌ ۚ وَأَقَلُّ عَدَدًا ۚ

यहाँ तक कि जब ये लोग उन चीज़ों को देख लेंगे जिनका उनसे वायदा किया जाता है तो उनको मालूम हो जाएगा कि किसके मददगार कमज़ोर और किसका शुमार कम है

25

قُلْ إِن أَدْرَىٰ أَقْرَبُ ۚ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ ۚ رَبِّي أَمَدًا

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं नहीं जानता कि जिस दिन का तुमसे वायदा किया जाता है करीब है या मेरे परवरदिगार ने उसकी मुद्दत दराज़ कर दी है

26

عَلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ ۚ أَحَدًا

(वही) ग़ैबवाँ है और अपनी ग़ैब की बातें किसी पर ज़ाहिर नहीं करता

27

إِلَّا مَنْ أَرْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ ۚ فَإِنَّهُ ۚ يَسْلُكُ مِنْ ۚ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ ۚ رَصَدًا ۚ

मगर जिस पैग़म्बर को पसन्द फरमाए तो उसके आगे और पीछे निगेहबान फरिश्ते मुक़र्रर कर देता है

28

لِيَعْلَمَ أَنَّ قَدْ أَبْلَغُوا ۚ رِسَلَتْ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۚ

ताकि देख ले कि उन्होंने अपने परवरदिगार के पैग़ामात पहुँचा दिए और (यूँ तो) जो कुछ उनके पास है वह सब पर हावी है और उसने तो एक एक चीज़ गिन रखी हैं

